

मोटापा...हाय मोटापा

आजकल चिकित्सा के क्षेत्र में शोध का एक प्रमुख विषय मोटापा है। इसका एक कारण तो यह है कि मोटापा कई बीमारियों को न्योता देने वाला लक्षण है। दूसरा कारण यह भी लगता है कि दुनिया में मोटापा एक महामारी की तरह फैल रहा है और दवा कंपनियां इसे एक बड़े धंधे के रूप में देख रही हैं। अब ओहायो के सिनसिनाटी विश्वविद्यालय के मैथियास टेशॉप ने चूहों पर प्रयोग करके बताया है कि मोटापे का वास्तविक कारण तो दिमाग में होता है।

टेशॉप के प्रयोगों का निष्कर्ष है कि दिमाग के एक भाग हायपोथेलेमस द्वारा यह तय किया जाता है कि कुल भोजन में से कितने से ऊर्जा प्राप्त की जाएगी और कितना संग्रहित किया जाएगा।

दी जर्नल ऑफ क्लिनिकल इन्वेस्टीगेशन में प्रकाशित विवरण के अनुसार टेशॉप ने कुछ चूहों के साथ प्रयोग किए। इनमें से कुछ चूहों के हायपोथेलेमस में इस तरह के परिवर्तन किए गए थे कि वह मेलेनोकोर्टिन नामक हार्मोन को स्वीकार नहीं करता था जबकि प्रयोग में कुछ चूहे ऐसे थे जो इस हार्मोन से उत्तेजित होते थे। हायपोथेलेमस को मेलेनोकोर्टिन के प्रति ग्रहणशील या अग्रहणशील बनाने के लिए कुछ दवाइयों का उपयोग किया गया था।

जिन चूहों को मेलेनोकोर्टिन ग्रहणशील बनाया गया था,

उनमें भोजन के कार्बोहाइड्रेट का ज्यादा उपयोग ऊर्जा उत्पादन के लिए हुआ। दूसरी ओर मेलेनोकोर्टिन अवरोधक चूहों में कार्बोहाइड्रेट को वसा में बदला गया।

टेशॉप की राय है कि हायपोथेलेमस में मेलेनोकोर्टिन का ग्राही वास्तव में अनुकंपी तंत्रिका तंत्र के माध्यम से वसा और लीवर कोशिकाओं पर क्रिया करता है। यही अनुकंपी तंत्र हृदय की धड़कन व पाचन का नियंत्रण भी करता है।

अब सवाल यह है कि क्या मनुष्यों में चूहों के समान यह क्रियाविधि काम करती है। टेशॉप को लगता है कि ऐसा होने की संभावना काफी अधिक है। उनके इस मत का कारण यह है कि प्रायः यह देखा गया है कि मेलेनोकोर्टिन ग्राही में गड़बड़ी वाले व्यक्ति मोटापे के शिकार होते हैं। यदि उनकी यह बात सही है तो मोटापे से बचने की कोई दवा भी इस जानकारी के आधार पर विकसित की जा सकती है। टेशॉप कहते हैं कि सिर्फ इस बात पर नियंत्रण करने से काम नहीं चलेगा कि व्यक्ति क्या व कितना खाते हैं। इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि शरीर उस भोजन का इस्तेमाल किस ढंग से करता है। (स्रोत फीचर्स)

